

महामन्त्र

ओ३म् ब्रह्म सत्यम् निरंकार
अजन्मा अद्वैत पुरखा सर्व व्यापक
कल्याण मूरत परमेश्वराय नमस्तं ॥

मंगलाचरण

नारायन पद बंदिये, ताप तपन होये दूर ।
नमो नमो नित चरण को, जो सब आधार हज़ूर ॥

हिरदे सिमरो नाम को, नित चरणी करो डण्डौत ।
सत् शरधा से पूजिये, रख सतगुरु की ओट ॥

दुविधा मिटे मंगल होये, जो चरण कंवल चित धार ।
रिद्ध सिद्ध आवे घर माहीं, पावें जय जय कार ॥

साचा ठाकुर सब समराथा, अपरम शक्त अपार ।
'मंगत' कीजे बन्दना, नित चरणी बलिहार ॥

सत मारग सोझी मिली, तन मन भया निहाल ।
गवन मिटी संसार की, सतगुरु मिले दयाल ॥

बार बार करूँ बन्दना, सतगुरु चरनी माई ।
'मंगत' सतगुरु भेंट से, फेर गरभ नहीं आई ॥

बार बार करूँ बन्दना, सतगुरु चरनी माई ।
'मंगत' सतगुरु भेंट से, फेर गरभ नहीं आई ॥

आरती

तू पार ब्रह्म परमेश्वर, तीन काल रछपाल ।
नित पाऊँ शरणागती, सत चरण कँवल दयाल ॥
तू नित पतित उद्धार है, पूरन प्रभ जगदीश ।
मोह माया संकट हरो, दीजो ज्ञान संदेश ॥
नित ही तेरे चरण की, मन में रहे परीत ।
तू दाता दातार है, पुरुखोत्तम सुखरीत ॥
पवन पानी बैसन्तर, धरती और आकाश ।
सबको सरजनहार तू, आद पुरख अबनाश ॥
घट - घट व्यापक तू परमेश्वर, सरब जियाँ आधार ।
अनमत कूकर को राख लें, किरपा निद्ध करतार ॥
काल करम जाए दूषना, खल बुद्धि हरो अज्ञान ।
सत श्रद्धा पाऊँ चरण की, अखण्ड प्रेम चित ध्यान ॥
दीनानाथ दयाल तू, पल पल होत सहाये ।
कीरत साचे नाम की, मन तन आए सहाये ॥
अन्तर का सब खेद हरो, दीजो सत विश्वास ।
शरणागत हूँ मंधमती, घट अन्तर करो परकास ॥
अन्तरगत सिमरन करूँ, निरन्तर धरूँ ध्यान ।
घट घट में दर्शन करूँ, आद पुरख भगवान ॥
तू साचा साहिब सरब परकाशी, शबद रूप आखण्ड ।
गुनी मुनी उस्तत करें, तन मन पाएँ आनन्द ॥

होवें दयाल हूँ सत परमेश्वर , देवें धीर अपार ।
निमख निमख सिमरण करूँ , चित चरण रहे आधार ॥
काया अन्तर परतख होवें , नाद रूप बिसमाद ।
पल पल कीजूँ आरती , तन मन तजूँ व्याध ॥
जग आवन सुफला होवे , तेरी आज्ञा मन में ध्याऊँ ।
अन्तरगत करूँ आरती , भव दुस्तर तर जाऊँ ॥
अन्धमत मूढ़ा नित प्रती , तेरे चरनी करे पुकार ।
'मंगत' माँगे दीनता , सत धर्म सुख सार ॥
अन्धमत मूढ़ा नित प्रती , तेरे चरनी करे पुकार ।
'मंगत' माँगे दीनता , सत धर्म सुख सार ॥

समता मंगल

समता धरम हृदय रसे, बिख ममता होवे नाश ।
सत सरूप परमात्मा, जल थल पाऊँ प्रकाश ॥
सब जीवों से प्रेम हो, तन मन सेवा धार ।
समता साधन पाये के, नित परसाँ जैकार ॥
सत कर्म सत निश्चय , निर्मल पाऊँ विचार ।
'मंगत' समता धार के , जीत चलो संसार ॥
सत कर्म सत निश्चय , निर्मल पाऊँ विचार ।
'मंगत' समता धार के , जीत चलो संसार ॥

सत् सरूप चिंतवन की भावनायें

तू कर्ता, तू हर्ता, सर्व तेरी आज्ञा, तू नित रखयक,
तू नित सहायक, तू दीनदयाल, तू नित बख्शनहार,
जो तेरी आज्ञा, तू नित पतित - पावन, तू नित सर्व-आधार,
तू नित संग - वासी, तू ही अविनाशी, तू ही सर्व आद,
तू ही नित अनाद, तू ही परम पिता, तू ही जगदीश्वर,
तू ही गोविन्द, तू ही गोपाल, तू ही मंगलदाता,
तू ही अनन्त, तू ही बे - अन्त, तू ही अपार, तू ही दयाल,
तू कर्ता, तू कर्ता, तू कर्ता, सर्व तेरी आज्ञा,
जो तेरी कृपा, सर्व तू ही, सर्व तू ही, सर्व तू ही,
आद - अन्त - मध्य तू ही, तू ही सत्, तू ही अगम,
तू ही अवगत, तू ही स्वामी, तू ही अन्तर्यामी,
तू ही कल्याण, तू ही जीवन, तू ही विधाता,
तू ही अन्तर, तू ही बाहर, तू ही दीनानाथ,
तू ही ज्ञान, तू ही विज्ञान, तू ही अगोचर,
तू ही नारायण, तू ही नारायण, तू ही नारायण ।